अध्याय - 3

भारत : स्थिति एवं भौतिक विभाग

हम पढ़ेंगे

3.1 भारत की भौगोलिक स्थिति एवं विस्तार

3.2 भारत की प्रशासनिक इकाईयां व जानकारी

3.3 भारत के भौतिक विभाग

3.1 भारत की भौगोलिक स्थिति एवं विस्तार

भारत विश्व का एक प्राचीन देश है। जब पश्चिम के देश अपनी विकास की आरम्भिक अवस्था में थे, यहाँ की संस्कृति अपनी चरम अवस्था में थी। भारत को आर्यावर्त, हिन्दुस्तान और इंडिया नाम से भी पुकारा जाता है। आजादी के बाद से भारत का तेजी से विकास हो रहा है। यह संसार का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। आर्थिक एवं सैन्य बल की दृष्टि से भी भारत विश्व में एक शक्ति के रूप में अपना स्थान बना रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की दृष्टि से भारत की भौगोलिक स्थिति अच्छी है।

स्थिति : विश्व में भारत की स्थिति को दिये गये मानचित्र में देखिये। आप पायेंगें कि भारत उत्तरी गोलार्द्ध में एशिया महाद्वीप के दक्षिणी भाग में स्थित है। इसके दक्षिण में हिन्द महासागर, पूर्व में बंगाल की खाड़ी और पश्चिम में अरब सागर स्थित है।

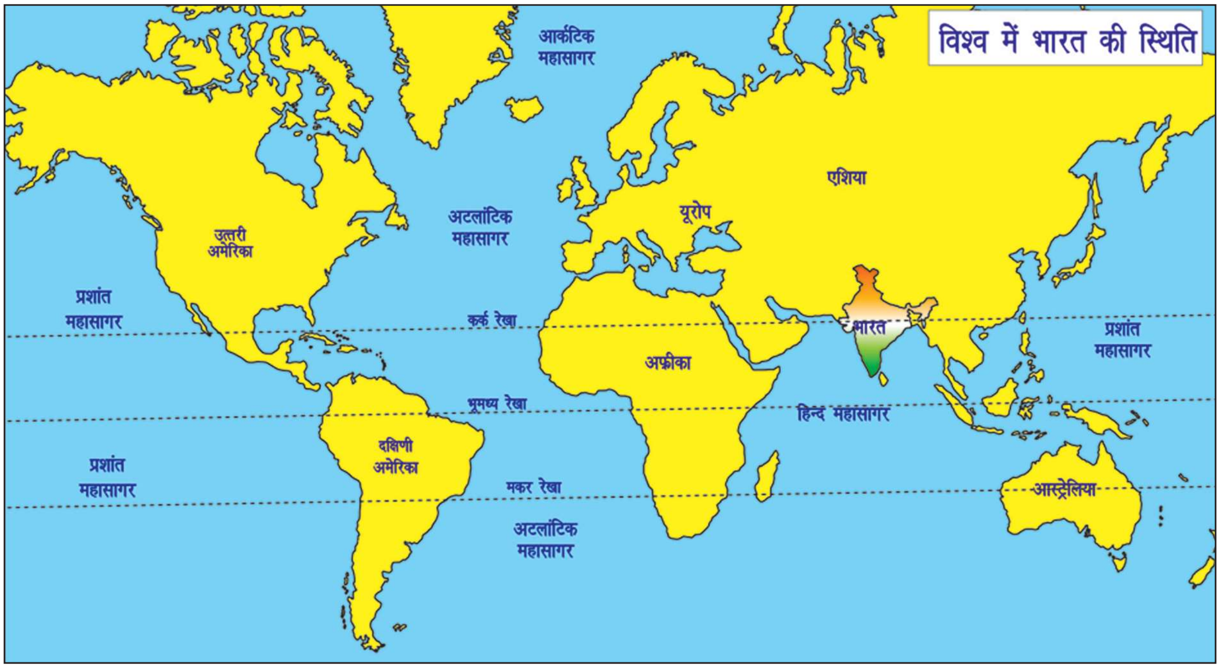

भारत की मुख्य भूमि का अक्षांशीय विस्तार $8^{\circ}4'$ उत्तर से $37^{\circ}6'$ उत्तरी अक्षांश एवं देशांतरीय विस्तार $68^{\circ}7'$ पूर्वी से $97^{\circ}25'$ पूर्वी देशांतर तक है। कर्क रेखा ($23^{\circ}30'$ उत्तरी अक्षांश) देश को लगभग दो बराबर भागों में बांटती है। $82^{\circ}30'$ पूर्वी देशांतर भारतीय समय के लिए मानक देशांतर रेखा है। इससे देश के प्रामाणिक समय की गणना की जाती है। भारत की स्थिति एवं विस्तार मानचित्र को देखकर पता कीजिए कि मानक देशांतर रेखा भारत के किन-किन राज्यों से होकर जाती है। यह भी पता कीजिए कि कर्क रेखा देश के किन-किन राज्यों से होकर गुजरती है। मुख्य भू-भाग के अलावा बंगाल की खाड़ी में स्थित अंडमान निकोबार द्वीप समूह व अरब सागर में लक्षद्वीप भारत के क्षेत्र हैं।

- कर्क रेखा भारत को लगभग दो बराबर भागों में बांटती है।
- मानक देशांतर रेखा के पूर्व में भारत का कम क्षेत्र स्थित है।
- देश का सबसे पश्चिमी राज्य गुजरात एवं सबसे पूर्वी राज्य अरूणाचल प्रदेश है ।
- देश का सुदूर उत्तरी राज्य जम्मू और कश्मीर एवं सबसे दक्षिणी राज्य तमिलनाडु है ।
- भारत का सबसे दक्षिणी बिन्दु इंदिरा पांइट अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में स्थित है ।

दिये गए भारत के मानचित्र में भारत के पड़ोसी देशों की स्थिति देखिए । भारत के उत्तर-पश्चिम में पाकिस्तान, अफगानिस्तान, उत्तर में चीन, नेपाल एवं भूटान, पूर्व में बांग्लादेश, म्यांमार व दक्षिण में श्रीलंका है। भारत एवं श्रीलंका के बीच पाक जल-डमरूमध्य (जल-संधि) है ।

भारत की तटीय सीमाएँ

भारत की स्थल सीमा 15,200 कि.मी. है । भारत की कुल तट रेखा लगभग 7,600 कि.मी. लम्बी है। पूर्वी तट रेखा बंगाल की खाड़ी में गंगा डेल्टा से कुमारी अंतरीप तक विस्तृत है । पूर्वी तट रेखा के उत्तरी भाग को उत्तरी सरकार और दक्षिणी भाग को कोरोमण्डल तट कहते हैं। पश्चिमी तट रेखा का विस्तार अरब सागर के किनारे है। इसके उत्तर में काठियावाड़ तट मध्य में कोंकण तट और दक्षिण में मालाबार तट स्थित है ।

हमारे समुद्री पड़ोसी देश दक्षिण में श्रीलंका और मालद्वीप हैं। अंडमान निकोबार द्वीप समूह के पूर्व में इंडोनेशिया स्थित है।

3.2 प्रशासनिक इकाईयाँ व जानकारी

क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का विश्व में सातवाँ स्थान है । विश्व के क्षेत्रफल का 2.42% भू-भाग भारत में है । भारत के स्थिति मानचित्र को देखकर पूर्व से पश्चिम का विस्तार एवं उत्तर से दक्षिण का विस्तार ज्ञात कीजिए । भारत का कुल क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग कि.मी. है ।

- भारत राज्यों का एक संघ है, इसमें 29 राज्य तथा 7 केन्द्र शासित प्रदेश हैं ।
- नई दिल्ली भारत की राजधानी है ।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान सबसे बड़ा तथा गोवा सबसे छोटा राज्य है ।
- अंडमान और निकोबार भारत का सबसे बड़ा केन्द्र शासित तथा लक्षद्वीप सबसे छोटा केंद्र शासित प्रदेश है ।
- पांडिचेरी ही एक ऐसा केन्द्र शासित राज्य है, जिसके कुछ क्षेत्र पूर्वी तट तथा कुछ क्षेत्र पश्चिमी तट पर स्थित हैं ।
- उत्तर-पूर्व के सात राज्यों को **'सात बहनें'** कहा जाता है ।
- भारत में जिलों की कुल संख्या 640 है।
- देश में गांवों की कुल संख्या (बिना बसे हुए गांवों सहित) 6,40,930 हैं।

प्रशासनिक दृष्टि से भारत 29 राज्यों व 7 केन्द्र शासित प्रदेशों में विभाजित हैं। दिये गए भारत के राजनैतिक मानचित्र को देखकर भारत के राज्य एवं केन्द्र शासित प्रदेशों की सूची तैयार कीजिए। नई दिल्ली भारत की राजधानी है ।

3.3 भारत के भौतिक विभाग

भारत विभिन्न स्थलाकृतियों वाला एक विशाल देश है । हमारे देश में हर प्रकार की भू-आकृतियाँ पायी जाती हैं, जैसे पर्वत, पठार, मैदान, नदी घाटी, मरूस्थल, द्वीप समूह। प्रकृति द्वारा प्रदत्त इन स्थलाकृतियों के आधार पर भारत को निम्नलिखित भौतिक विभाग में बांटा जा सकता है -

1. उत्तरीय पर्वतीय प्रदेश
2. उत्तर का विशाल मैदान
3. प्रायद्वीपीय पठार
4. तटीय प्रदेश
5. द्वीप समूह

1. उत्तरीय पर्वतीय प्रदेश

भारत की उत्तरी सीमा पर विस्तृत हिमालय, विश्व की सबसे ऊँची व बनावट के दृष्टिकोण से नवीन वलित पर्वत श्रृंखला है। ये पर्वत श्रृंखलाएँ पश्चिम-पूर्व दिशा में सिंधु नदी से लेकर ब्रह्मपुत्र तक फैली है । हिमालय 2400 कि.मी. की लंबाई में धनुषाकार रुप में फैला है। इसकी चौड़ाई कश्मीर में 400 कि.मी. एवं अरूणाचल में 150 कि.मी. है । विस्तार एवं ऊंचाई के आधार पर हिमालय को तीन भागों में बांट सकते हैं ।

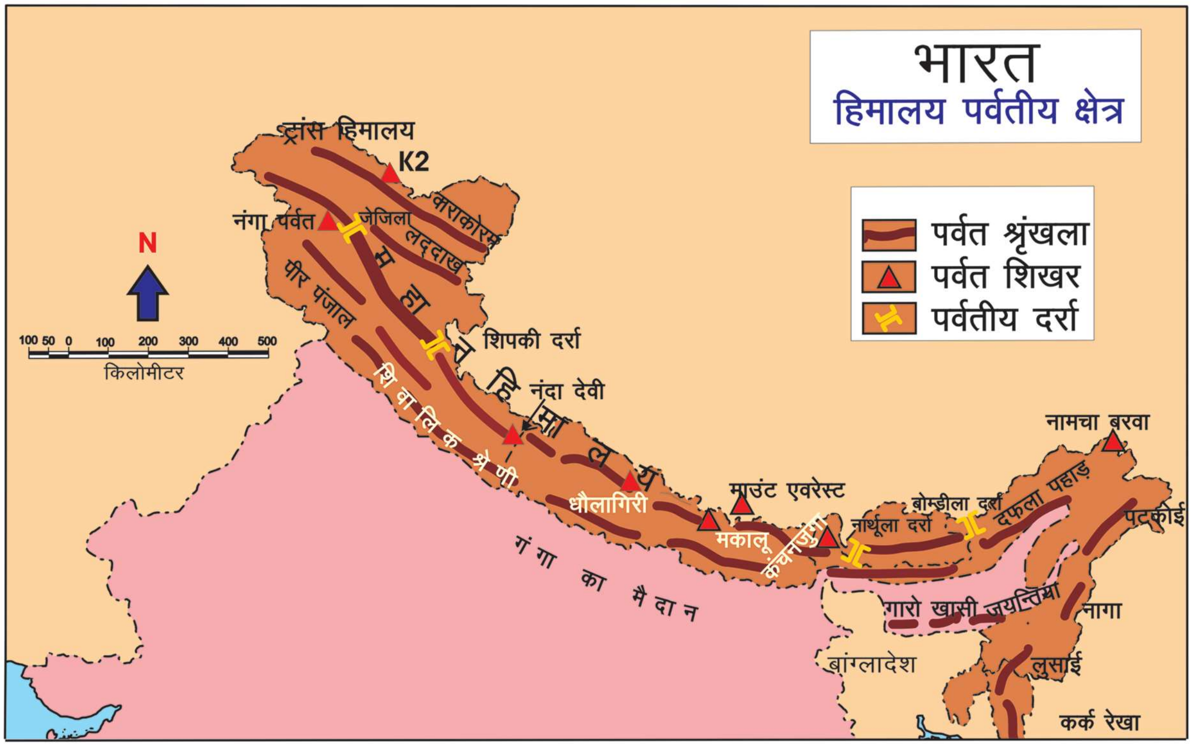

(i) महान या आंतरिक हिमालय – सबसे उत्तरी भाग मे स्थित पर्वत श्रृंखला को महान या आंतरिक हिमालय या हिमाद्रि कहते हैं । इसमें 6,000 मीटर की औसत ऊंचाई वाले सर्वाधिक शिखर हैं । इस हिमालय का आंतरिक भाग ग्रेनाइट का बना है। यह श्रृंखला हमेशा बर्फ से ढकी रहती है तथा बहुत सी हिमानियों का प्रवाह इसी क्षेत्र में है । विश्व की सर्वोच्च शिखर माउण्ट एवरेस्ट (8848 मीटर) नेपाल में स्थित है । कंचनजंगा (8598 मीटर), नंगा पर्वत, नंदा देवी, नामचा वरवा आदि भारत के प्रमुख पर्वत शिखर इसी क्षेत्र में है । दिए गए मानचित्र में पर्वतीय शिखरों को देखिए ।

(ii) मध्य हिमालय या हिमाचल – महान हिमालय के समानान्तर दक्षिण में स्थित इस श्रृंखला को मध्य हिमालय या हिमाचल कहते हैं। इसका निर्माण अत्यधिक संपीडित तथा परिवर्तित शैलों से हुआ है। जिसमें स्लेट, क्वार्टज मुख्य हैं। इनकी ऊँचाई 3,700 मीटर से 4,500 मीटर के बीच है तथा औसत चौड़ाई 50 किलोमीटर है । पीर पंजाल इस क्षेत्र की सबसे लंबी व महत्वपूर्ण श्रृंखला है । धौलाधर एवं महाभारत श्रृंखलाएँ भी महत्वपूर्ण हैं । इसी भाग में कश्मीर की घाटी तथा हिमाचल के कांगड़ा एवं कुलू की घाटियाँ स्थित हैं । शिमला, मसूरी, नैनीताल, दार्जलिंग जैसे पर्वतीय नगर मध्य हिमालय में स्थित है।

(iii) शिवालिक श्रेणी – शिवालिक हिमालय क्षेत्र के सबसे दक्षिण में स्थित पर्वत श्रृंखला है । हिमालय

पर्वतीय क्षेत्र के दिए गए मानचित्र में इनकी स्थिति को देखिए । इन श्रेणियों की औसत ऊंचाई 900 से 1100 मी. तथा चौड़ाई 10 से 50 कि.मी. है । यह श्रृंखला अवसादी शैलों से बनी है । इस क्षेत्र की घाटियाँ नदियों द्वारा लाई गई बजरी तथा जलोढ़ मिट्टी की मोटी परतों से ढकी हुई हैं । मध्य हिमालय व शिवालिक के बीच स्थित लम्बवत् घाटी को दून कहा जाता है, जैसे – देहरादून, कोथरीदून एवं पाटलीदून ।

- **प्रादेशिक स्तर पर हिमालय को पंजाब हिमालय (सिन्धु नदी से सतलुज नदी तक), कुमायूं हिमालय (सतलुज से काली नदी तक), नेपाल हिमालय (काली नदी से तिस्ता नदी तक), एवं असम हिमालय (तिस्ता नदी से ब्रह्मपुत्र नदी तक) के नाम से भी जाना जाता है।**
- **हिमालय पर्वत श्रेणी के कुछ प्रमुख दर्रे हैं –काराकोरम (जम्मू और कश्मीर), शिपकी ला (हिमाचल प्रदेश), नाथुला (सिक्किम), बोमडिला (अरूणाचल) आदि स्थित है ।**

हिमालय पर्वत हमें मध्य एशिया से आने वाली बर्फीली हवाओं से बचाता है । हिमालय पर्वत की सततवाहिनी नदियों, वन्य जीवों व औषधियों, रमणीक स्थलों, फसलों एवं विद्युत उत्पादन की दृष्टि से बहुत महत्व है । इस क्षेत्र में खनिज पदार्थों के मिलने की सम्भावना भी है ।

2. उत्तर का विशाल मैदान

उत्तरी मैदान तीन प्रमुख नदी प्रणालियों सिंधु, गंगा एवं ब्रह्मपुत्र तथा इनकी सहायक नदियों द्वारा लाई गयी मिट्टी के निक्षेप से बना है । इसे गंगा और ब्रह्मपुत्र का मैदान भी कहते हैं । यह लगभग 3,200 कि. मी. लम्बा एवं 150 से 300 कि.मी. चौड़ा है । यह लगभग एक सपाट मैदान है और इसके उच्चावच में बहुत कम अंतर है। यहाँ की उपजाऊ मिटटी, उपयुक्त जलवायु तथा पर्याप्त जल आपूर्ति कृषि कार्य के विकास में बहुत सहायक है। यह सघन जनसंख्या वाला क्षेत्र है। इसे तीन भागों में बांट सकते हैं– 1. पश्चिमी मैदान 2. मध्यवर्ती मैदान 3. पूर्वी मैदान।

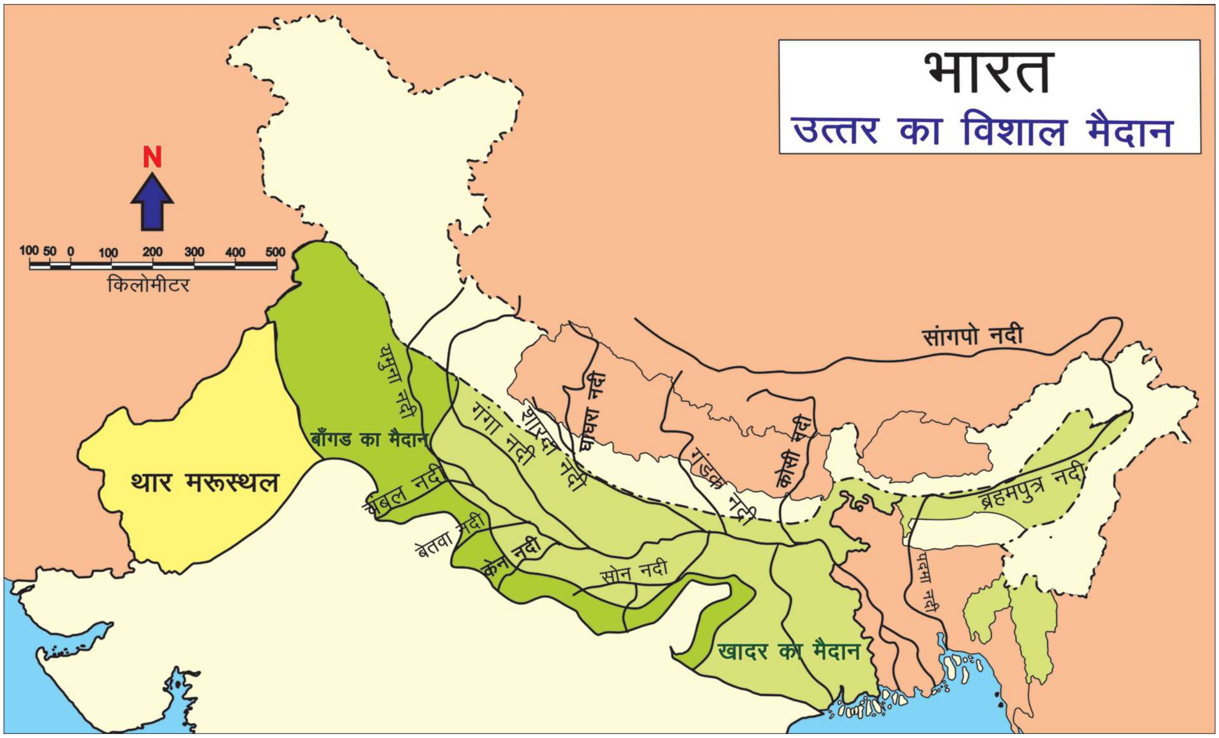

पश्चिमी मैदान इसका विस्तार पंजाब, हरियाणा और राजस्थान में है। इसका ढाल उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम की ओर है। इसका पश्चिमी भाग मरूस्थल है । इसे थार मरूभूमि कहते हैं । लूनी यहाँ की प्रमुख नदी है । यमुना के पश्चिम में सतलुज, व्यास और रावी नदियाँ बहती है । वह बहुत उपजाऊ भूमि हैं पंजाब में इसे खादर कहते हैं।

मध्यवर्ती मैदान इसका विस्तार यमुना नदी से बांग्लादेश तक 1400 कि.मी. लम्बा है । इसे गंगा का मैदान कहते हैं । इसका ढाल पश्चिम से पूर्व की ओर है । जिस क्षेत्र में बाढ़ का पानी प्रतिवर्ष पहुंचता है, उसे खादर और जहां नही पहुंचता है उसे बांगर कहते हैं । हिमालय से लगे भाग को तराई कहते हैं । यहां की मिट्‌टी जलोढ़ है ।

बांगर भूमि	खादर भूमि
1. यह उत्तरी मैदान की उच्च भूमि है जो प्राचीन निक्षेपों से निर्मित है । इसमें कंकड़ भी पाये जाते हैं ।	1. यह उत्तरी भारत के मैदानों की निचली भूमि है। इनमें कांप मिटटी पाई जाती है ।
2. बाढ़ का जल इन तक नही पहुंचता है।	2. यह भूमि बाढ़ जल में डूब जाती है ।
3. इसमें जल तल की गहराई अधिक होती है ।	3. इसमें भूमिगत जल स्तर ऊंचा होता है ।
4. इसका विस्तार मुख्य रूप से पंजाब और उत्तर प्रदेश के मैदानी भागों में है ।	4. पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार एवं बंगाल में इसका विस्तार हैं ।

पूर्वी मैदान यह मैदान 650 कि.मी. लम्बा एवं लगभग 100 कि.मी. चौड़ा है । इसे ब्रह्मपुत्र का मैदान भी कहते हैं। इसका ढाल उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम की ओर है।

मध्यवर्ती मैदान भारत के लगभग एक चौथाई क्षेत्रफल को घेरे हुए है । यहां सम्पूर्ण देश की लगभग 45% जनसंख्या निवास करती है । सिन्धु, सतलुज, गंगा, ब्रह्मपुत्र नदियों द्वारा बहाकर लाई गई मिट्टी से बना होने और सिंचाई की सुविधा के कारण यह मैदान हिमालय पर्वत का 'उपहार' कहलाता है। उत्तरी मैदान कृषि की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यहां सघन आबादी है। नहरों, सड़कों और रेलों का जाल बिछा है । यह मैदान सभ्यता की जन्मभूमि रहा है । अमृतसर, कुरूक्षेत्र, मथुरा, वृन्दावन, प्रयाग, काशी, गया, गढ़मुक्तेश्वर, वाराणसी आदि तीर्थ स्थल इसी मैदान में स्थित हैं

3. प्रायद्वीपीय पठार : यह सबसे प्राचीन भूखण्ड गोंडवानालैण्ड का ही एक भाग है। जिसकी समुद्र से औसत ऊँचाई 600 से 900 मीटर है यह पठारी भाग तीन तरफ से समुद्र से घिरा है व एक ओर से स्थलीय भाग से घिरा है इसलिए इसे प्रायद्वीपीय पठार भी कहते हैं। इस त्रिभुजाकार क्षेत्र का आधार उत्तर की ओर दिल्ली और राजमहल की पहाड़ियों से उत्तरी मैदान तक (चौड़ा) एवं दक्षिण की सीमा पूर्व में पूर्वी घाट तथा पश्चिम में पश्चिमी घाट बनाते हैं व दक्षिणतम छोर कन्याकुमारी है। क्षेत्रफल की दृष्टि से प्रायद्वीपीय पठारी क्षेत्र देश का सबसे बड़ा भौतिक प्रदेश है। प्रायद्वीपीय पठार को दो उपभागों अर्थात् मध्यवर्ती उच्च भूमि तथा दक्कन के पठार में विभाजित किया जा सकता है।

मध्यवर्ती उच्च भूमि – प्रायद्वीपीय पठार का उत्तरी भाग अनेक पठारों, अनाच्छादित पर्वत श्रेणियों तथा नीची पहाड़ियों द्वारा निर्मित है। यह भाग कठोर आग्नेय शैलों द्वारा बना है। उत्तरी पश्चिमी भाग अरावली पहाड़ियों द्वारा घिरा है जो प्राचीन वलित पर्वत के अवशिष्ट हैं। मध्यवर्ती उच्चभूमि की दक्षिणी सीमा विंध्याचल पर्वतों तथा उनके पूर्वी विस्तार कैमूर पहाड़ियों से निर्धारित होती हैं। अमरावती तथा विंध्याचल पर्वतों के बीच में मालवा का पठार स्थित है। इस पर बेतवा, पार्वती, काली सिन्ध, चम्बल और माही नदियां बहती हैं । मध्यवर्ती उच्चभूमि के उत्तरी पूर्वी भाग को बुन्देलखण्ड कहते हैं। कैमूर और भांडेर श्रेणियां के पूर्व में बघेलखण्ड का पठार स्थित है । उच्चभूमि क्षेत्र के बीच के

भाग में नर्मदा तथा सोननदी की घाटियों के बीच विंध्याचल कैमूर पहाड़ियां कगार बनाती है। सोन नदी से पूर्व की और झारखण्ड का छोटा नागपुर का पठार भी इसी क्षेत्र का भाग है। इस पठार पर महानदी, सोन, स्वर्ण रेखा और दामोदर नदियां प्रवाहित होती हैं । इस पठार में खनिज के असीम भंडार हैं।

दक्कन का पठार – दक्कन का पठार उत्तर में सतपुड़ा, महादेव तथा मैकल पहाड़ियों से दक्षिण की ओर प्रायद्वीप के दक्षिणी सिरे तक विस्तृत है पठार का उत्तरी पश्चिमी भाग मुख्यत: लावा निक्षेपों से निर्मित है। पश्चिम की ओर इसकी सीमा पश्चिमी घाटों द्वारा निर्धारित होती है जो अरब सागर के तट के सहारे अविछिन्न रूप में उत्तर से दक्षिण

तक फैले हैं। महाराष्ट्र और कर्नाटक में इसे सहयाद्री कहते हैं। इसमें स्थित दर्रों थालघाट, भोरघाट व पालघाट से इस पहाड़ को पार किया जा सकता है । तमिलनाडु में इन्हें नीलगिरी के नाम से पुकारते हैं और केरल तमिलनाडु सीमा पर इन्हें अन्नामलाई और कार्डामम (इलायची) पहाड़ियों के नाम से पुकारा जाता है। पालघाट दर्रा नीलगिरि और अन्नामलाई पहाड़ी को अलग करता है । अन्नामलाई की शाखायें पालनी पहाड़ियाँ और इलायची की पहाड़ियाँ हैं । दक्षिण भारत का सर्वोच्च शिखर अनाईमुदी (2695 मी.) पालनी पहाड़ियों में स्थित है । पूर्वी घाट 800 कि.मी. लम्बा है । महेन्द्रगिरि इसकी सबसे ऊंची चोटी है। इसमें नीस चट्टानों की प्रमुखता है ।

प्रायद्वीपीय पठार अत्यन्त प्राचीन चट्टानों से बना होने के कारण खनिज पदार्थों में धनी है। कर्नाटक में सोना, मध्यप्रदेश में हीरा, संगमरमर, चूने का पत्थर और मेंगनीज, तेलंगाना और पश्चिम बंगाल में कोयला तथा बिहार एवं उड़ीसा में लोहा पाया जाता है । महाराष्ट्र काली मिट्टी के कारण कपास की खेती के लिए प्रसिद्ध है। दक्षिण-पश्चिम प्रायद्वीप पठार में मसाले चाय व काफी उत्पादन के लिए जाना जाता है। यहां जल विद्युत उत्पादन की भी सम्भावनाएँ हैं। इसी पठारी प्रदेश में उटकमण्ड, पचमढ़ी, महाबलेश्वर आदि स्वास्थ्य वर्द्धक स्थान है ।

4. तटीय प्रदेश :

प्रायद्वीपीय पठार कच्छ से उड़ीसा तक तटीय मैदानों की एक संकरी पट्टी से घिरा हुआ है इस तटीय मैदान को इनकी बनावट में अंतर के कारण दो भागों में पश्चिमी तथा पूर्वी तटीय भागों में विभक्त किया जाता है।

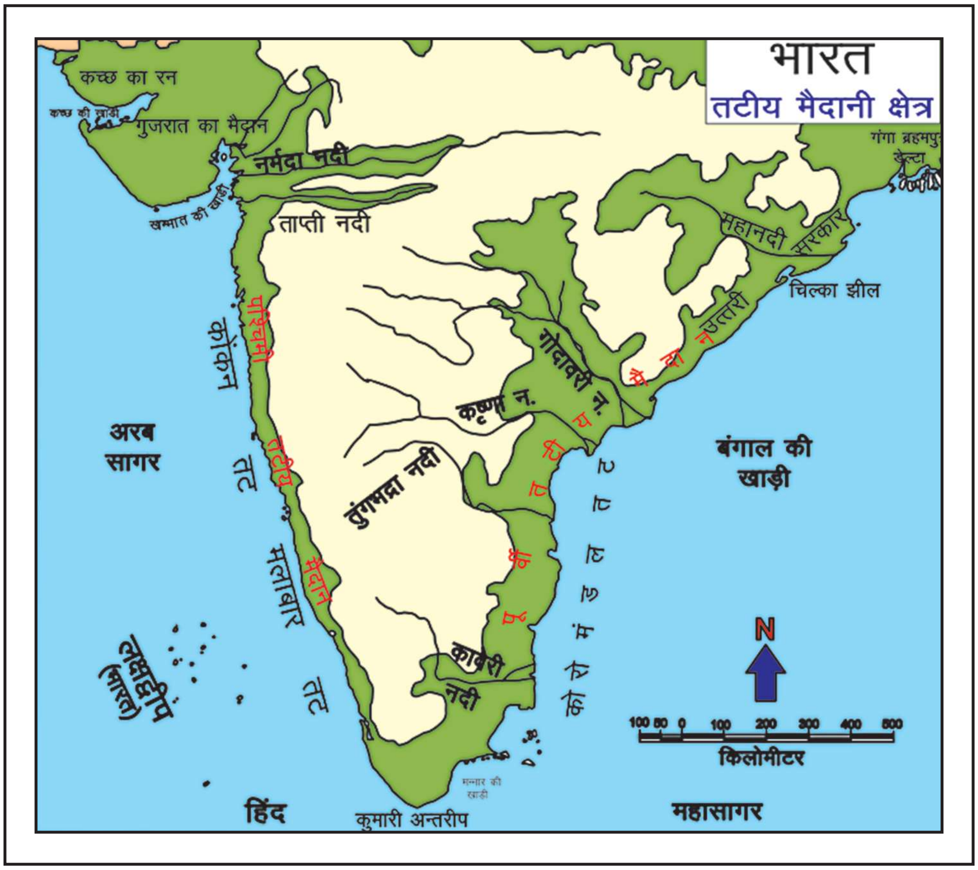

पश्चिमी तटीय मैदान अरब सागर के सहारे-सहारे गुजरात से केरल तक फैला हुआ है। यह मैदान संकरे हैं, इन्हें उत्तरी भाग में कोंकण और गोवा के दक्षिण मे मालाबार तटीय मैदान कहते हैं। इनकी अधिकतम चौड़ाई 40 कि.मी. है । यहाँ नदियाँ छोटी और तेज बहने वाली है। इस क्षेत्र में कुछ ही बड़ी नदियाँ हैं नर्मदा व ताप्ती। पश्चिमी तट की नदियां अपने मुहाने पर ज्वारनद मुख बनाती हैं। कच्छ और गुजरात के तटीय मैदान शुष्क हैं।

पूर्वी तटीय मैदान का विस्तार बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी नदी के डेल्टा प्रदेश में है । यहाँ उपजाऊ कांप मिट्टी मिलती है। इस तट पर चिल्का, कोलेरू एवं पुलीकट झीलें हैं। उत्तरी भाग के तट को उत्तरी सरकार और दक्षिणी भाग को कोरोमण्डल तट कहते हैं।

पश्चिमी तटीय मैदान	पूर्वी तटीय मैदान
1. इनका विस्तार अरब सागर के सहारे है ।	1. इनका विस्तार बंगाल की खाड़ी के तट के सहारे है ।
2. यह मैदान संकरा हैं ।	2. इस मैदान की चौड़ाई अधिक है ।
3. इसका निर्माण छोटी, पर तेज गति से बहने वाली नदियों से हुआ है ।	3. इसका निर्माण महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी जैसी बड़ी नदियों द्वारा निक्षेप से हुआ है ।
4. इस तट पर डेल्टा नही हैं ।	4. इस मैदान के तटीय भाग में विकसित डेल्टा हैं ।

5. द्वीप समूह : भारत के द्वीपीय समूहों- लक्षद्वीप तथा अण्डमान व निकोबार द्वीप समूह की उत्पत्ति अलग प्रकार से हुई है। लक्षद्वीप अनेक छोटे-छोटे द्वीपों को मिलाकर बना है। यह अरब सागर में केरल के तट से थोड़ी दूर पर स्थित है। प्रवाल (मूंगे) के निक्षपों से बने इन द्वीपों को एटॉल कहा जाता है।

बंगाल की खाड़ी में स्थित अंडमान और निकोबार द्वीप बड़ा द्वीप समूह है। इनकी संख्या अधिक है और यह अधिक विस्तृत क्षेत्र में बिखरे हुए हैं यह देश के मुख्य भाग से अधिक दूरी पर भी स्थित हैं। ये द्वीप निमज्जित पर्वत श्रेणियों के शिखर हैं। इनमें से कुछ ज्वालामुखी क्रियाओं द्वारा भी बने हैं। अण्डमान द्वीप एवं निकोबार द्वीप समूह में ज्ञात एवं अज्ञात कुल द्वीपों की संख्या लगभग 300 है। यह द्वीप समूह लगभग 8249 वर्ग कि.मी. में फैले हैं। इन द्वीप समूहों का देश की सामरिक सुरक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान है।

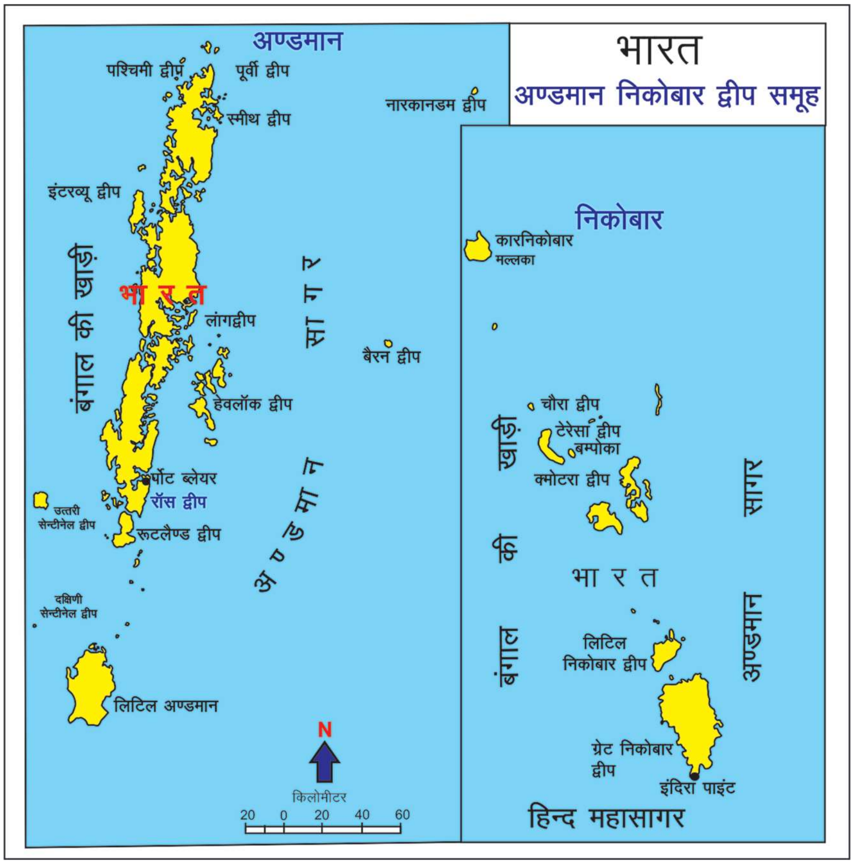

शब्दावली

मानक देशान्तर	:	भारत की मानक मध्यान्ह रेखा $82^{0}30'$ पूर्व देशांतर का स्थानीय समय सारे भारत का प्रमाणित समय माना जाता है।
ग्रेनाइट	:	वे शैलें जो मैग्मा के पृथ्वी के भीतर जम जाने से बनती है।
परिवर्तित शैल	:	पूर्व निर्मित आग्नेय अथवा अवसादी शैलों पर अधिक दबाव या ताप के अवसाद के कारण भौतिक तथा रासायनिक परिवर्तन द्वारा बनी नई शैल।
निक्षेप	:	अवसाद का जमाव
उच्चावच	:	धरातल अथवा समुद्र की तलहटी पर प्राकृतिक रूपरेखा में पाए जाने वाले ऊँचाइयों के अंतर को उच्चावच कहते हैं।
बागर	:	मैदानों की पुरानी जलोढ़
खादर	:	बाढ़ के मैदानों की नवीन जलोढ़
जलोढ़ मैदान	:	नदियों द्वारा बहाकर लाई गई महीन गाद या शिला कणों वाली कॉप मिट्टी के निक्षेप।
गोंडवाना लैण्ड	:	ये प्राचीन विशाल महाद्वीप पैंजिया का दक्षिणतम भाग है जिसमें आज के अफ्रीका, आस्ट्रेलिया तथा अंटार्कटिका सम्मिलित है।
प्रवाल	:	अल्पजीवी अतिसूक्ष्म जीव है जो एक साथ रहते हैं। ये छिछले, उष्ण, कीचड़ रहित जल में पनपते हैं। ये कठोर तत्व निकालते हैं इनकी अस्थियों व सिरे के जमाव से कठोर दीवारों जैसी प्रवाल भित्तियां बन जाती है।
निम्मजन	:	भूगर्भ विज्ञान में इसका अभिप्राय धरातल की सतह के नीचे धसने की क्रिया से है।

अभ्यास

1. **सही विकल्प चुनिए –**

अ. भारत का मानक समय निर्धारित होता है –

(i) 72^{0} पूर्व देशांतर से (ii) $80^{0}30'$ पूर्व देशांतर से

(iii) $82^{0}30'$ पूर्व देशांतर से (iv) 85^{0} पूर्व देशांतर से

ब. भारत में कर्क रेखा किस राज्य से होकर नहीं गुजरती है –

(i) गुजरात (ii) महाराष्ट्र

(iii) छत्तीसगढ़ (iv) मध्यप्रदेश

स. देश का सबसे बड़ा केन्द्र शासित क्षेत्र है –

(i) अंडमान निकोबार द्वीप समूह (ii) दादरा और नगर हवेली

(iii) लक्षद्वीप (iv) पाण्डिचेरी

द. भारतीय प्रायद्वीप पठार किस प्रकार की चट्टानों से बना है–

(i) परिवर्तित चट्टानों से (ii) अवसादी शैलों

(iii) अत्यंत प्राचीन चट्टानों से (iv) उपर्युक्त में से कोई नहीं

2. सत्य/असत्य छांटिए-

1. भारत के दक्षिण में हिन्द महासागर है।
2. उत्तर पश्चिम राज्यों को सात बहनें कहा जाता है।
3. अंडमान निकोबार द्वीप समूह अरब सागर में स्थित हैं।

3. अति लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. भारत को किन-किन नामों से जाना जाता है ?
2. भारत का क्षेत्रफल लिखिए।
3. भारत में कितने राज्य और केन्द्र शासित प्रदेश हैं ?
4. भारत के दो द्वीपीय पड़ोसी देशों के नाम लिखिए ।
5. पूर्वी तट पर स्थित किन्ही दो झीलों के नाम लिखिए।
6. भारत के किन द्वीपों का निर्माण प्रवालों द्वारा हुआ है ?
7. हिमालय पर्वतमाला के दो प्रमुख शिखरों के नाम लिखिए।
8. पश्चिम से पूर्व तक भारत का विस्तार कितना है ?

4. लघुउत्तरीय प्रश्न :

1. भारत की भौगोलिक स्थिति का महत्व समझाइए।
2. भारत के उत्तर के विशाल मैदान का वर्णन कीजिए।
3. दक्कन के पठार का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।
4. भारतवासियों के लिए हिमालय का क्या महत्व है ? लिखिए।
5. बांगर व खादर भूमि में अन्तर समझाइए।
6. पूर्वी तटीय मैदान का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

5. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

1. भारत को कितने भौतिक विभागों में विभाजित किया जा सकता है? किसी एक का वर्णन कीजिए।
2. भारत की स्थिति व विस्तार का वर्णन कीजिए।
3. हिमालय पर्वतीय क्षेत्र का वर्णन कीजिए।
4. प्रायद्वीपीय पठार का वर्णन कीजिए।
5. टिप्पणी लिखिए- भारतीय तटवर्ती क्षेत्र, भारतीय द्वीप समूह।

6. मानचित्र पठन : भारत के मानचित्र का अध्ययन कर निम्नांकित के विषय में लिखिए ।

1. भारत की उत्तरी सीमा का अक्षांशीय विस्तार ।
2. उन राज्यों के नाम जिनकी सीमाएं चीन से मिलती हैं।
3. उन राज्यों के नाम जिनसे होकर कर्क रेखा गुजरती है।
4. बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियों के नाम।
5. हिमालय में स्थित कोई तीन दर्रों के नाम।

7. भारत के रेखा मानचित्र में दर्शाइए –

1. कर्क रेखा व $82^{0}30^{'}$ पूर्वी देशान्तर रेखा
2. केन्द्र शासित प्रदेश – चण्डीगढ़ व पाण्डिचेरी
3. बोमडीला और नाथूला दर्रा
4. रायपुर, भोपाल
5. नर्मदा नदी, महानदी
6. हिमालय पर्वत, विंध्याचल पर्वत

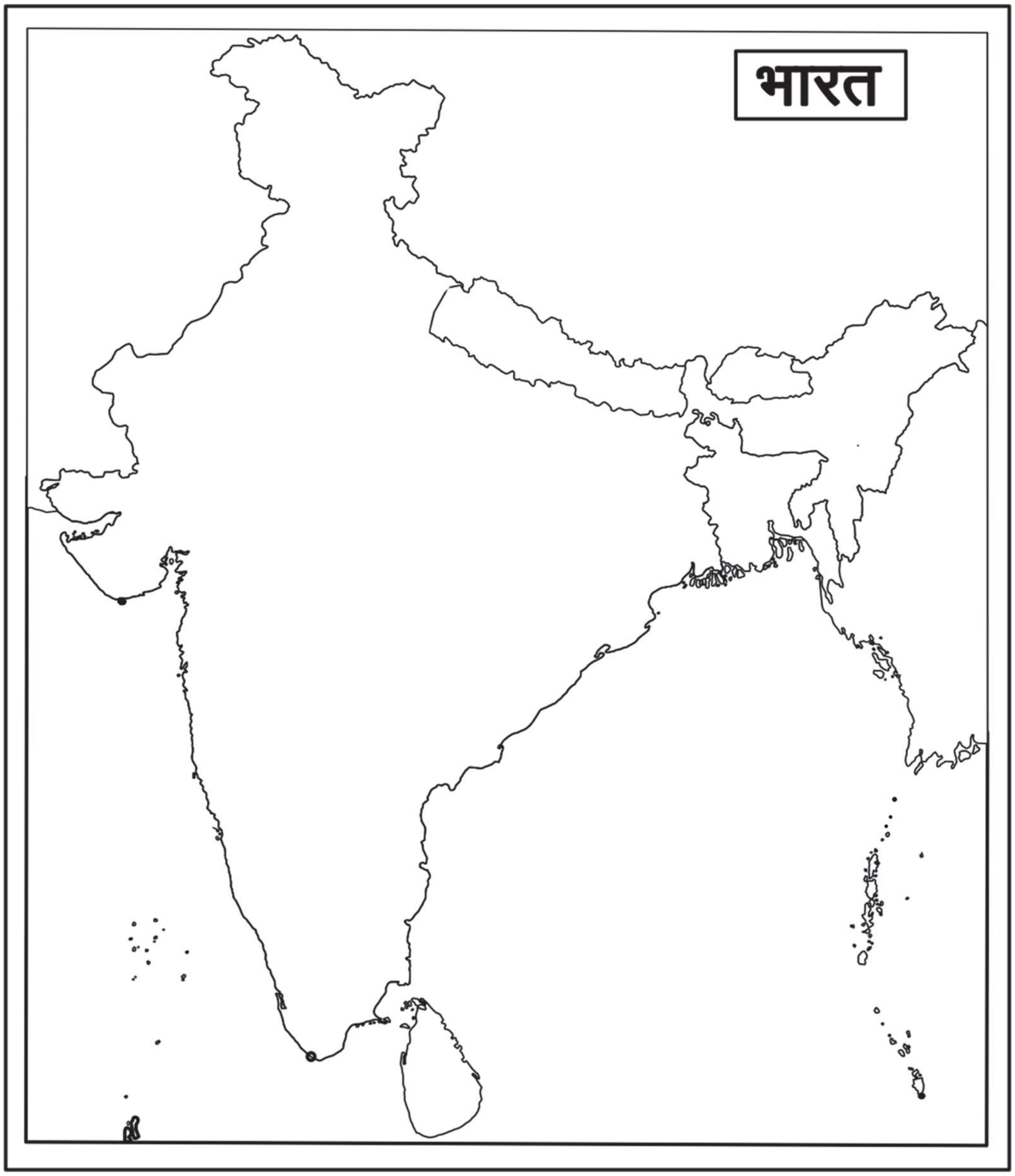

7. प्रायोजना कार्य :

- विद्यार्थियों को 5 समूहों में विभाजित कर भारत के भौतिक विभाग पर अलग–अलग मॉडल तैयार करने हेतु कार्य आवंटित करिए व उस पर कक्षा में प्रस्तुतिकरण कराएँ।